पाठ 3

रणथंभौर की यात्रा

हठीले हम्मीर की पुण्य धरा रणथंभौर का स्मरण आते ही सभी के मन में इस धरा को देखने की स्वतः ही इच्छा होती है। अब यह क्षेत्र वन्य क्षेत्र के रूप में विकसित है। अरावली एवं विंध्याचल की सुरम्य पर्वतमाला के मध्य स्थित विश्व प्रसिद्ध रणथंभौर बाघ अभयारण्य को देखने की परिवार के सदस्यों की तीव्र उत्कण्ठा हुई सभी ने मिलकर रणथंभौर के भ्रमण का कार्यक्रम तैयार किया। हम सभी 9 अक्टूबर रात्रि 11.00 बजे जयपुर से रेल द्वारा सवाईमाधोपुर के लिए रवाना हुए। एकाएक मेरी बेटी ने पूछा, ''पिताजी यहाँ से सवाईमाधोपुर कितनी दूरी पर है।'' मैंने बेटी को बताया कि रेलमार्ग द्वारा जयपुर से सवाईमाधोपुर की दूरी लगभग 132 किलोमीटर है। हम रात्रि 2.30 बजे सवाईमाधोपुर पहुँचे। वहाँ हमने रेलवे स्टेशन के पास ही एक होटल में कमरा लिया और कुछ समय आराम किया।

प्रातः 5.00 बजे उठकर सभी जल्दी–जल्दी स्नानादि से निवृत्त हो बुकिंग खिड़की के लिए चल पड़े। बुकिंग खिड़की हमारे होटल से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर थी और बुकिंग खिड़की से प्रथम पारी में भ्रमण का टिकिट लेना था। बुकिंग खिड़की से ही उद्यान भ्रमण के लिए जिप्सी या केंटर मिलते हैं, जिसके द्वारा उद्यान का भ्रमण करवाया जाता है। हम सभी प्रातः 6.00 बजे बुकिंग खिड़की पर पहुँच गए। वहाँ से हमने पाँच टिकिट लिए और केंटर में बैठकर प्रातः 6.00 बजे रणथंभौर के लिए निकल पड़े।

मैं आपको बता दूँ कि रणथंभौर भ्रमण के लिए आए पारिवारिक सदस्यों में, मैं, मेरी पत्नी, मेरी दो बेटियाँ शिवांगी व श्रेया तथा एक बेटा शुभम इस प्रकार कुल पाँच सदस्य थे। हम पाँचों केंटर पर सवार होकर रणथंभौर अभयारण्य की ओर निकल पड़े। रणथंभौर बाघ अभयारण्य क्षेत्र की शुरुआत खिलचीपुर ग्राम पंचायत के गणेशधाम तिराहे से होती है, जिसकी दूरी सवाईमाधोपुर रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर है। यहाँ अभयारण्य में प्रवेश के लिए चेक पोस्ट बनी हुई है।

हम बातों ही बातों में गणेशधाम तिराहे पर कब पहुँच गए, पता ही नहीं चला। सच पूछो तो इसके दो कारण थे–एक तो रणथंभौर के प्रति हमारी उत्सुकता और दूसरी ओर बच्चों द्वारा पूछे जा रहे नए–नए प्रश्न।

वैसे तो रणथंभौर की हरीतिमा सवाईमाधोपुर नगर से निकलते ही प्रारंभ हो जाती है, लेकिन गणेशधाम तिराहे के पश्चात् घने जंगल की शुरुआत होती है। हमने साथ में एक गाइड भी लिया था जो हमें नई–नई जानकारियाँ दे रहा था।

ज्यों ही हमने हरियाली से आच्छादित क्षेत्र में प्रवेश किया, उस सुरम्य दृश्य को देखकर सभी रोमांचित हो गए और सभी के चेहरे खिल उठे। सर्वप्रथम हमने मिश्रदरा दरवाज़ा देखा। वहाँ कल–कल करते बहते झरने व गोमुख से गिरता पानी देखा। बहुत ही मनोहारी दृश्य था।

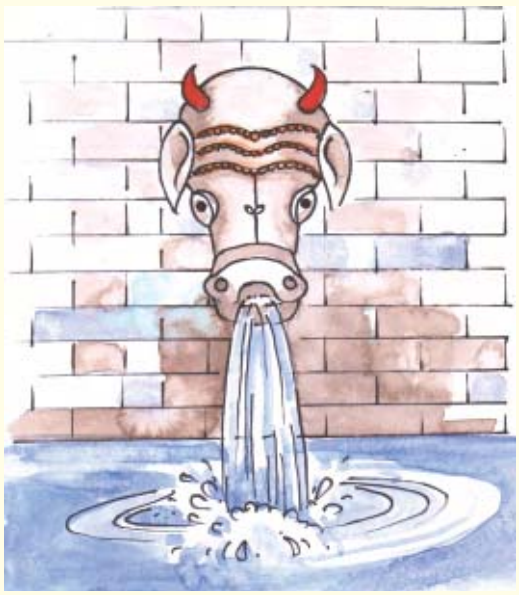

मेरी बेटी शिवांगी ने गाइड से बातों ही बातों में जानकारी ली –

शिवांगी – भैया! यहाँ पानी कहाँ से आ रहा है?

गाइड – पहाड़ों के ऊपरी छोर पर एकत्र पानी बहकर झरने के रूप में यहाँ आ रहा है।

शिवांगी – भैया! यह अभयारण्य क्षेत्र कितने वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है?

गाइड – पूर्व में रणथंभौर बाघ आरक्षित क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 1334.6 वर्ग किलोमीटर था। बाघों की बढ़ती संख्या एवं बाघों के परस्पर टकराव होने की आशंका के कारण इस अभयारण्य क्षेत्र को 1700 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ाया गया है।

शिवांगी – बाघों की बढ़ती संख्या एवं बाघों के परस्पर टकराव से क्या तात्पर्य है?

गाइड – पूर्व में बाघों का शिकार हो जाने के कारण बाघों की संख्या घट गई थी। केंद्र व राज्य सरकार तथा वन विभाग के प्रयासों से बाघों के शिकार पर रोक लगी और बाघों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। बाघ अपना एक निर्धारित क्षेत्र बनाते हैं, जिसका क्षेत्रफल लगभग 2 वर्ग किलोमीटर होता है। उस क्षेत्र में दूसरे बाघ के प्रवेश करने पर उनमें टकराव की स्थिति बन जाती है।

शिवांगी – इस क्षेत्र में लगभग कितने बाघ होंगे?

गाइड – वर्तमान में यहाँ लगभग 55 से 60 बाघ हैं।

इस प्रकार बातें करते हुए और रणथंभौर की छटा को निहारते हुए हम रणथंभौर बाघ अभयारण्य के मुख्य प्रवेश द्वार पर जा पहुँचे।

प्रातः 7.00 बजे ज्यों ही मुख्य द्वार खुला, हमारा केंटर सघन वन क्षेत्र में आगे बढ़ा। बीच–बीच में पड़ने वाले झरने और नाले मोहक दृश्य उपस्थित कर रहे थे। जैसे–जैसे गाड़ियाँ आगे बढ़ती जाती थीं हमारी उत्सुकता भी वैसे–वैसे बढ़ती जा रही थी। धोक के सघन झाड़ीदार वन बाघों के लिए अच्छी आश्रय स्थली है। बाघ खुले में रहना कम पसंद करते हैं।

सबसे पहले हम मलिक तालाब पर पहुँचे। तालाब के किनारे हरिणों का झुंड दिखाई दिया। हरिणों के झुंड में छोटे–छोटे मृग–छौने भी थे। सुनहरी त्वचा पर चकते और अजीब से शृंगों वाले हरिणों के झुंड ज्यों ही हमारी गाड़ी उनके पास पहुँची, वे चौकड़ियाँ भरने लगे ऐसा अद्‌भुत नजारा पहले कभी नहीं देखा था। मैंने उत्सुकतावश बच्चों की ओर देखा तो बच्चे हरिणों के चित्र कैमरे में कैद करने में मशगूल थे। गाइड ने हरिणों की जानकारी देते हुए कहा कि इन हरिणों को चीतल कहते हैं।

गाइड के निर्देश पर गाड़ी को दाहिनी ओर बढ़ाया गया। यह रास्ता कुछ पथरीला और

ऊबड़–खाबड़ था। गाड़ियों की कूदा–फाँदी और ऊपर नीचे की चाल ने सभी को हिलाकर रख दिया। लगभग 500 मीटर आगे चलने पर एक तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में तैरते मगरमच्छों को देखकर बच्चों का मन गद्‌गद् हो गया। इस तालाब पर विचरण करते सांभर, नीलगाय आदि वन्य प्राणी भी देखे साथ ही विभिन्न प्रकार के पक्षियों की कलरव ध्वनि भी मनमोहक थी। गाइड ने बताया कि इन पक्षियों की चहचहाहट से यह पता लग जाता है कि बाघ किस क्षेत्र में दिखाई दे सकता है। गाइड ने बताया कि सबसे प्रमुख कोल बंदर की मानी जाती है। जब बाघ उस क्षेत्र में आने वाला होता है तो बंदर अजीब प्रकार की आवाज़ निकालकर सभी को सावचेत कर देता है।

गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। थोड़ा आगे चलकर हमारी गाड़ी अचानक रुक गई। गाड़ी के बिलकुल सामने, झरने के किनारे एक बाघ और बाघिन धूप सेकते दिखाई दिए। प्रातःकाल की गुन–गुनी धूप में दोनों मस्त हो बैठे थे। बाघिन बाघ के बालों को अपनी जीभ से साफ कर रही थी। गाइड ने बताया कि इस स्थान का नाम चिड़ीखोह है तथा ये दोनों बाघ बाघिन माँ–बेटे हैं। बाघिन का नाम नूर और बाघ का नाम सुल्तान है। यहाँ रणथंभौर अभयारण्य में बाघों को नाम व नंबर दिए हुए हैं जिससे इनकी पहचान होती है। बाघ–बाघिन की अठखेलियाँ हमने लगभग आधे घंटे तक निहारी। क्या मनमोहक दृश्य था। धूप उनके बदन की चमक को बढ़ा रही थी। काली धारियाँ और सफेद रंग की झाँई ने उनके सुनहरे शरीर की शोभा को कई गुना बढ़ा दिया था। बाघ बहुत सावधान और चौकन्ना वन्य प्राणी होता है। पानी के किनारे पसरे बाघों को हमारा वहाँ जमे रहना अच्छा नहीं लगा होगा। वे दोनों आराम से उठे, अपनी रोबिली मुद्रा में पूँछ उठाई और धीरे–धीरे झाड़ियों के झुरमुट में हमारी नजरों से ओझल हो गए। गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ गई। हमने जंगल में अनेक जंगली जानवर देखे, जिनमें चिंकारा, बघेरा, भालू, लंगूर, बंदर, जंगली बिल्ली व अनेक प्रकार के पक्षी भी थे। गाइड ने बताया कि इस जंगल में लगभग 300 प्रकार के पक्षी हैं।

भ्रमण की समय सीमा नजदीक आ जाने के कारण हम मुख्य द्वार की ओर बढ़े और लगभग 10.30 बजे हम रणथंभौर के ऐतिहासिक दुर्ग के मुख्य द्वार पर पहुँच गए। रणथंभौर दुर्ग को देखते ही जान पड़ता है कि यह इतिहास में बहुत प्राचीन और अभेद्य दुर्ग है। गाइड ने बताया कि इस दुर्ग के निर्माण का कहीं कोई इतिहास नहीं मिलता है। सन् 1300 ईस्वी में यहाँ के प्रतापी राजा राव हम्मीर हुए थे। अतः माना जाता है कि इस दुर्ग का निर्माण 1300 ईस्वी से पूर्व हुआ था।

मेरी बेटी श्रेया ने गाइड से राव हम्मीर के बारे में पूछा। गाइड ने बताया कि राव हम्मीर महान् प्रतापी और शरणागत वत्सल राजा थे। उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के भगोड़े सैनिक माहिमशाह को शरण दी और मरते दम तक उसकी रक्षा की। गाइड ने बताया कि राव हम्मीर चौहान वंशीय शासक जैत्र सिंह के छोटे पुत्र थे।

इस प्रकार जानकारी लेते हुए हम पैदल ही आगे बढ़ रहे थे। चलते–चलते हम दुर्ग के प्रथम द्वार पर पहुँचे। क्या विशाल दरवाज़ा था। देखते ही हमारी आँखें फटी की फटी रह गईं। इसे नोलखा दरवाज़ा कहते हैं। नोलखा दरवाज़े में प्रवेश कर हम दुर्ग में आगे की ओर बढ़े। आगे हम हाथीपोल दरवाज़े पर पहुँचे। यहाँ से दुर्ग की दीवार बिल्कुल सीधी है। कहते हैं कि यहाँ हम्मीर का घोड़ा हम्मीर को लेकर सीधा दुर्ग पर चढ़ा था। हम घोड़े के खुर के निशान देखकर आश्चर्यचकित रह गए।

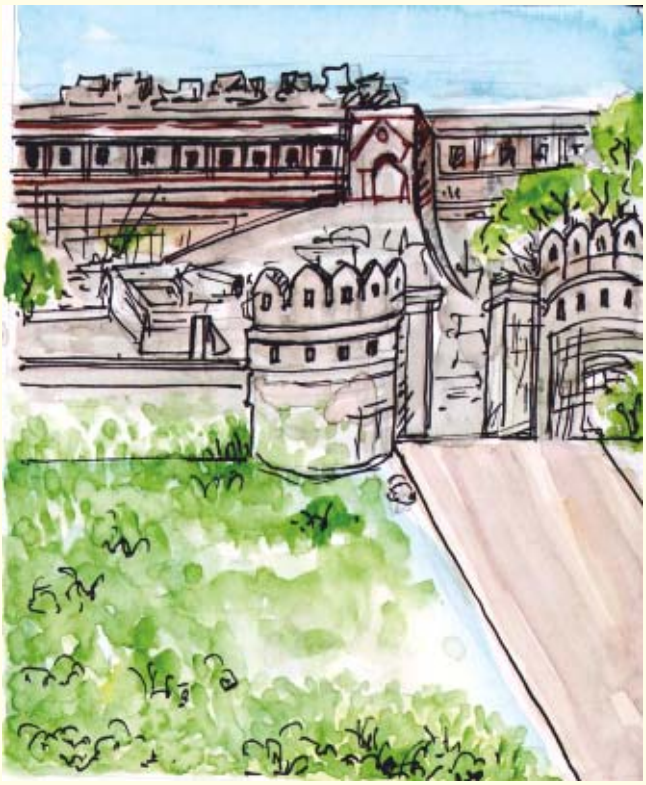

दुर्ग का मनोहारी दृश्य देखते–देखते हम अंधेरी दरवाज़े पर पहुँचे। यहाँ एक साथ तीन दरवाज़े हैं तथा इन दरवाज़ों में अंधेरा रहता है। अंधेरी दरवाज़े को पार कर हम दुर्ग के ऊपरी छोर पर जा पहुँचे। वहाँ से चारों ओर दृष्टि डालने पर हरियाली से आच्छादित जंगल बहुत ही सुंदर दिखाई दे रहा था।

यहाँ से थोड़े आगे बढ़ने पर हमें बत्तीस खंभ की छतरी दिखाई दी। लगभग एक किलोमीटर की दुर्ग की दुर्गम चढ़ाई चढ़ने के पश्चात् हम इस बत्तीस खंभों की छतरी में जाकर बैठे तो वहाँ शीतल बयार बह रही थी। हमने वहाँ सुकून का अनुभव किया तथा पसीना सुखाया। यहाँ बैठने से हमारी संपूर्ण थकावट उड़न छू हो गई।

गाइड ने बताया कि दुर्ग के सपाट मैदान पर निर्मित यह छतरी राव हम्मीर के शासन काल में चारों ओर से हवाखोरी, सभा, दरबार, विचार–विमर्श, विश्राम व आमोद–प्रमोद की जगह थी जिसका उपयोग अब भी पर्यटक इन कामों के लिए करते हैं। हमने इस छतरी पर लगभग आधे घंटे विश्राम किया।

विश्राम पश्चात् हम आगे बढ़े। सपाट मैदान में एक और राव हम्मीर का महल अविचल खड़ा दिखाई दिया। लेकिन हम इस महल को अंदर से नहीं देख पाए क्योंकि पुरातत्व विभाग ने इसे पर्यटकों के लिए बंद कर रखा है। थोड़ा आगे बढ़ने पर हमें दो तालाब दिखाई दिए। रास्ते के बाएँ और ''पद्मला'' तालाब तथा रास्ते के दाएँ ओर थोड़ा पीछे आने पर रानीहोद तालाब है। पद्मला तालाब बहुत बड़े क्षेत्र में फैला है तथा

इसमें अथाह पानी है। कहा जाता है कि राव हम्मीर की पुत्री पद्मावती इस तालाब में पारस पत्थर लेकर कूद गई थी। पद्मावती के आत्म बलिदान के कारण इस तालाब का नाम पद्मला पड़ा। इस तालाब के पानी से किले में जलापूर्ति की जाती थी।

हमने रानीहोद तालाब को देखा। काली मंदिर के नजदीक स्थित अथाह गहराई वाला यह तालाब रानियों के स्नान करने के लिए था। लेकिन राव हम्मीर के हार की गलत सूचना पाकर यहाँ की सभी रानियों ने इस तालाब में छलाँग लगाकर जल–जौहर किया था।

यहाँ से हम आगे बढ़े और लगभग मध्याह्न 12.00 बजे त्रिनेत्र गणेशजी के मंदिर पहुँचे। वहाँ ढप–ढोल और मृदंग के साथ शृंगार आरती हो रही थी। हम सभी आरती में खड़े हुए, आँखें बंदकर प्रथम पूज्य गणेशजी की आराधना की, त्रिनेत्र गणेशजी की मनोहारी छवि के दर्शन कर हम धन्य हो गए। मंदिर में पहुँचने पर हमें अपार शांति का अनुभव हुआ। गणेश मंदिर के पुजारी जी से जानकारी ली तो पुजारी जी ने बताया कि यह त्रिनेत्रधारी गणेशजी का एक मात्र मंदिर है जो विश्व प्रसिद्ध है। पुजारी जी ने बताया कि इस मूर्ति की यह खासियत है कि यह स्थापित मूर्ति न होकर भूमि से स्वउद्भव मूर्ति है। विवाह आदि शुभ कार्यों के अवसर पर लोग प्रथम पूज्य गणेशजी को सर्व कार्य सिद्धि बाबत् न्योता देने आते हैं। जो व्यक्ति स्वयं नहीं आ सकते हैं उनकी निमंत्रण पाती आती है, जिसे गणेशजी को सुनाया जाता है।

गणेश दर्शन के पश्चात् हमने दुर्ग में स्थित रघुनाथ जी का मंदिर, जैन मंदिर, मस्जिद, महल, गुप्त गंगा, जौरा–भौरा आदि दर्शनीय स्थलों को देखा।

रणथंभौर में और भी कई दर्शनीय स्थान हैं, लेकिन हमारे पास समय का अभाव होने से उन स्थानों को नहीं देख पाए। दुर्ग में शेष रहे ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा को अधूरी छोड़ गाड़ी में बैठकर सवाईमाधोपुर आ गए। वहाँ होटल में सभी ने खाना खाया व सायं 5.00 बजे रेल द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया। रणथंभौर की प्राकृतिक छटा, वन्य जीवों का स्वछंद विचरण, दुर्ग के पुरातात्विक स्थलों को देख मन गद्गद् हो गया। बच्चों के चेहरे खिल उठे। बच्चों की प्रसन्नता को देख मुझे अपार सुख की अनुभूति हुई।

शब्दार्थ

पुण्य	–	पवित्र	सुरम्य	–	सुंदर
निवृत्त	–	मुक्त	उत्सुकता	–	उत्साह
हरीतिमा	–	हरियाली	आच्छादित	–	ढका हुआ
रोमांचित	–	प्रसन्न	सावचेत	–	सावधान
श्रृंग	–	सींग	बयार	–	हवा
अठखेलियाँ	–	मस्ती	दुर्गम	–	कठिन
मृग छौने	–	हरिण के बच्चे	आश्रय स्थली	–	रहने का स्थान
मनोहारी	–	मन को हरने वाला, सुंदर			

पाठ से

अभ्यास कार्य

सोचें और बताएँ

1. रणथंभौर कौन–कौनसी पर्वतमालाओं के मध्य है?
2. अभयारण्य में कितने प्रकार के पक्षी हैं?
3. क्या कारण है कि लेखक घोड़े के खुर देखकर आश्चर्यचकित रह गया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. रेलमार्ग से जयपुर से सवाईमाधोपुर की दूरी है–

   (क) 140 कि.मी. (ख) 165 कि.मी.

   (ग) 132 कि.मी. (घ) 150 कि.मी. ( )

2. घने जंगल की शुरुआत होती है–

   (क) गणेशधाम तिराहे के बाद (ख) सवाईमाधोपुर नगर के बाद

   (ग) मिश्रदरा से (घ) कहीं से नहीं ( )

कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. सर्वप्रथम हमने ..... दरवाजा देखा। (मिश्रदरा / नोलखा)
2. सबसे पहले हम ..... तालाब पर पहुँचे। (पदमला / मलिक)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजा हम्मीर की पुण्य धरा कौनसी है?
2. गौमुख में पानी कहाँ से आता है?
3. बाघ के आने पर अजीब–सी आवाज़ कौन निकालता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजा हम्मीर कौन थे?
2. रणथंभौर बाघ अभयारण्य में लेखक ने कौन–कौनसे वन्य प्राणी देखे?
3. रणथंभौर दुर्ग के मुख्य दरवाज़े कौन–कौनसे हैं? लिखिए।

4. बत्तीस खंभों की छतरी की विशेषता बताइए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. रणथंभौर दुर्ग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. आपने पिछली कक्षा में संधि के बारे में पढ़ा है, नीचे कुछ संधि विच्छेद दिए गए हैं, आप संधि कर नए शब्द बनाइए–

जैसे : अभय + अरण्य – अ + अ = आ – अभयारण्य

शरण + आगत –

सदा + एव –

नर + ईश –

पर + उपकार –

परि + आवरण –

2. (क) हम गाइड के साथ चल रहे थे।

(ख) शेरनी अपने बच्चों के साथ चल रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में लिंग और वचन का भेद है। इसी कारण इनकी क्रिया के रूप में परिवर्तन हुआ है। 'के साथ' वाक्यांश दोनों में समान है। इसके साथ ही इसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। ऐसे शब्दों को अविकारी या अव्यय शब्द कहते हैं।

अव्यय शब्द पाँच प्रकार के होते हैं –

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक 5. निपात

पाठ में आए अविकारी शब्दों को छाँटकर लिखिए।

पाठ से आगे

1. आप भी कहीं न कहीं घूमने अवश्य गए होंगे। एक यात्रा का वर्णन नीचे लिखे बिंदुओं के आधार पर कीजिए–

स्थान चयन, यात्रा की तैयारी, प्रस्थान, स्थानों का वर्णन, अनुभव, वापसी।

2. यदि आपको बाघ दिखाई दे, तो आप बचाव में क्या करेंगे?

यह भी करें–

1. रणथंभौर वन्य अभयारण्य है। देश में स्थित अन्य वन्य अभयारण्यों की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

द्वारा, उद्यान, अभेद्य, पद्मावती, उत्तर

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

शरीर जल से, मन सत्य से, आत्मा धर्म से और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।